स्थिर अंगोंवाले शरीरों से प्रभु का स्तवन करते हुए देवोपासन योग्य जीवन बिताएँ।

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—विश्वेदेवाः॥ छन्दः—विराट्स्थानात्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

कल्याण का मार्ग

१८७५. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।
ओं स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ३॥

नः=हमारे लिए **वृद्धश्रवाः**=सदा से बढ़े हुए ज्ञानवाला **इन्द्रः**=सर्वशक्तिमान् व सब शत्रुओं का विद्रावण करनेवाला प्रभु **स्वस्ति**=कल्याण करनेवाला हो, अर्थात् प्रभुकृपा से हमारा ज्ञान बढ़े। उस प्रज्वलित ज्ञानाग्नि में सब वासनाओं का दहन होकर हमें वास्तविक शान्ति का लाभ हो और हमारी जीवन-स्थिति उत्तम हो। **नः**=हमारे लिए **विश्ववेदाः**=सम्पूर्ण धनों का स्वामी **पूषा**=सबका पोषण करनेवाला प्रभु पोषण के लिए आवश्यक धनों को प्राप्त कराता हुआ **स्वस्ति**=कल्याणकर हो, अर्थात् प्रभुकृपा से हम पुरुषार्थ करते हुए आवश्यक धनों की प्राप्ति के द्वारा जीवन की स्थिति को उत्तम कर सकें। **नः**=हमारे लिए **तार्क्ष्यः**=(तृक्ष गतौ) गति में उत्तम—स्वाभाविकी क्रियावाला—पूर्णरूप से निःस्वार्थ क्रियावाला **अरिष्टनेमिः**=अहिंसित मर्यादावाला प्रभु **स्वस्ति**=कल्याणकर हो, प्रभु की भाँति सतत निःस्वार्थ गतिवाले बनकर—सदा मर्यादा में चलते हुए हम कभी हिंसित न हों और इस मर्यादित जीवन में कल्याण-ही-कल्याण प्राप्त करें। **नः**=हमारे लिए **बृहस्पतिः**=बृहत् (बड़े-बड़े) आकाशादि का पति वह प्रभु **स्वस्ति**=कल्याण को **दधातु**=धारण करे। बृहस्पति प्रभु की उपासना करते हुए हम भी बृहस्पति बनें—उदार हृदयाकाशवाले बनें। यह उदारता हमें कृपण (miser) की कृपणता (misery) से ऊपर उठाकर कल्याणमय स्थिति में प्राप्त कराए।

इस प्रकार बढ़े हुए ज्ञानवाले व शक्तिसम्पन्न होकर हम 'गोतम' होंगे—प्रशस्त इन्द्रियोंवाले होंगे और सब बुराइयों को छोड़कर, मर्यादित जीवन को अपनाकर 'राहूगण' होंगे।

भावार्थ—हम प्रभु की उपासना करते हुए १. बढ़े हुए ज्ञानवाले व काम-क्रोध आदि शत्रुओं का संहार करनेवाले बनें। २. पोषण के लिए आवश्यक धन प्राप्त करें। ३. निरन्तर क्रियाशील जीवन बिताते हुए कभी मर्यादा का उल्लंघन न करें। ४. उदार हृदय बनकर कल्याण को सिद्ध करें।

इत्येकविंशोऽध्यायः, नवमप्रपाठकश्च समाप्तः॥

इत्युत्तरार्चिकः॥

इति सामवेदभाष्यम्॥